महिलाओं में यौन रोग के लक्षण

- योनि से असाधारण/दुर्गंध स्राव होना
- जननेन्द्रिय अथवा उसके आस–पास सूजन होना, खुजली होना
- संभोग के समय दर्द या जलन होना
- जननेन्द्रिय के आस–पास घाव, फफोले, फुंसिया अथवा फोड़ा होना
- पेट के निचले भाग (पेड़ू) में दर्द होना

यदि इनमें से कोई भी लक्षण हो तो वह यौन रोग का लक्षण हो सकता है। ऐसे में तुरंत डाक्टर द्वारा इलाज कराना चाहिए। यदि लक्षण दिखने बन्द हो जाये तब भी दवा नहीं छोड़नी चाहिए जब तक डाक्टर ना कहे। सरकार द्वारा संचालित निःशुल्क सुरक्षा क्लीनिक सरकारी अस्पतालों में उपलब्ध हैं।
अपने यौन साथी का भी पूरा इलाज कराना चाहिए।

एच.आई.वी. का पता कैसे कर सकते हैं?

- रक्त की जांच द्वारा शरीर में एच.आई.वी. की उपस्थिति का पता लगाया जा सकता है।
- भारत सरकार की एच.आई.वी. नीति के अनुसार जांच स्वेछा से होना चाहिए; जांच का परिणाम गोपनीय रखना चाहिए (अर्थात् जिसकी जांच हो उसको ही नतीजा बताना चाहिए); तथा जांच के पहले तथा बाद में परामर्श देना चाहिए। शामिल हैं।
- एच.आई.वी. परीक्षण/जांच की सुविधा सरकारी और गैर–सरकारी दोनों ही अस्पतालों में उपलब्ध है। झारखण्ड के हर जिले में निःशुल्क सरकारी "एकीकृत परामर्श और परीक्षण केन्द्र" (आई.सी.टी.सी.)

अपनी एच.आई.वी. की स्थिति की जानकारी के लिए निकट के जांच केन्द्र से सम्पर्क करें। समय पर एच.आई.वी. स्थिति को जानने से एच.आई.वी. के संचरण की रोकथाम में सहायता मिलती है।

एच.आई.वी. एड्स के साथ जी रहे व्यक्तियों को क्या सहयोग दिया जा सकता हैं?

- उनका बहिष्कार न करें और उनसे भेदभाव न करें। यह याद रखें कि एच.आई.वी. सामान्य व्यवहार और साथ काम करने से नहीं फैलता।
- उनका समर्थन करने से उनको एच.आई.वी. का सामना करने में और सम्मानजनक जीवन जीने में मदद मिलती है।

संक्रमित व्यक्तियों के प्रति सहायक नज़रिए एच.आई.वी. की रोकथाम में मदद करते है। लांछन और भेदभाव के कारण लोग अपनी एच.आई.वी. स्थिति जानने से रुकते हैं और संक्रमित व्यक्ति जरुरी देखभाल, उपचार और समर्थन तक पहुँचने में हिचकते हैं।

सुरक्षित एवं स्वस्थ्य शिशु के जन्म के लिए सभी गर्भवती महिलाओं का एच.आई.वी. एवं सिफलिस जॉच आवश्य कराये।

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन | झारखण्ड सरकार | NACO | JSACS

एच.आई.वी. और एड्स

इसके बारे में जानें

सेवाएं मुफ्त भी गुप्त भी

अधिक जानकारी या उचित निःशुल्क सलाह के लिए अपने निकटतम सरकारी अस्पताल के आई. सी. टी. सी. केन्द्र अथवा 1097 (**टांल फ्री नम्बर**) से सम्पर्क करें।

झारखण्ड राज्य एड्स नियंत्रण समिति
सदर अस्पताल परिसर, रांची,
Phone: 0651-2211018, Fax: 0651-2210380
E-mail : Jharkhandsacs@gmail.com, Website : Jsacs.org.in

एच.आई.वी. और एड्स की जानकारी आवश्यक है क्योंकि:

- सही जानकारी एवं सुरक्षित व्यवहार अपनाकर एच.आई.वी. संक्रमण को रोका जा सकता है।
- एच.आई.वी. और एड्स का सबसे अधिक प्रभाव समाज के सबसे उत्पादक आयु वर्ग (15–49 वर्ष) पर होता है।
- एड्स का इलाज अभी तक संभव नहीं है। ए. आर. टी. की दवाईयाँ लेने से समान्य जीवन व्यतीत किया जा सकता है

एच.आई.वी. संक्रमण किसी को भी हो सकता है और प्रत्येक व्यक्ति एच.आई.वी. की रोकथाम में सक्रिय भूमिका निभा सकता है।

एच.आई.वी. (HIV) क्या है?

- एच.आई.वी. का अर्थ है ह्यूमन इम्यूनो–डेफिशिएंसी वायरस (Human Immuno Deficiency Virus)
- एच.आई.वी. शरीर में प्रवेश करने के बाद धीरे–धीरे रोग प्रतिरोधक क्षमता अर्थात् शरीर की रोगों से लड़ने।की ताकत को खत्म करने लगता है।
- एच.आई.वी. केवल मनुष्यों में पाये जाने वाला वायरस (विषाणु) है।

आमतौर पर प्रारंभ में एच.आई.वी. संक्रमण का कोई खास लक्षण नहीं होता है। एच.आई.वी. संक्रमण का अर्थ एड्स नहीं होता है।

एड्स (AIDS) क्या है?

ए (A) = अक्वायर्ड = प्राप्त किया हुआ, **आई** (I) इम्यून = शरीर से लड़ने की क्षमता (प्रतिरक्षण); **डी** (D) = डेफिशियेंसी = कमी होना (शरीर के प्रतिरक्षण तंत्र में कमी होना) **एस** (S) सिंड्रोम = लक्षणों का समूह

- एड्स एक अवस्था है जो एच.आई.वी. के कारण शरीर के प्रतिरक्षण तंत्र के कमजोर होने को प्रदर्शित करती है जिसमें शरीर आम बीमारियों से लड़ने के काबिल नहीं रहता।
- एच.आई.वी. संक्रमण से एड्स की अवस्था आने में सामान्यतः 10–12 वर्षों का समय लग सकता है।
- आजकल ऐसी दवाईयां उपलब्ध हैं जिनसे इस अवधि को बढ़ाया जा सकता है।

एच.आई.वी. चार कारणों से फैल सकता है:

संक्रमित व्यक्ति के साथ असुरक्षित यौन-संबंध से

संक्रमित सुईयों के प्रयोग अथवा साझेदारी से

संक्रमित रक्त या रक्त उत्पादों के चढ़ाये जाने से

संक्रमित माता से उसके शिशु को

एच.आई.वी. नहीं फैलता है:

संक्रमित व्यक्ति से हाथ मिलाने से

संक्रमित व्यक्ति द्वारा उपयोग किये गये बर्तनों में खाना खाने या पानी पीने से

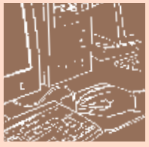

संक्रमित व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किये गये उपकरणों के उपयोग से

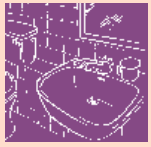

संक्रमित व्यक्ति द्वारा उपयोग किये गये शौचालय के इस्तेमाल से

- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति के साथ कार्य करने में कोई खतरा नहीं है।
- एच.आई.वी. मच्छर के काटने, छींकने अथवा खाँसने, रक्तदान करने अथवा सामान्य सामाजिक सम्पर्को – जैसे गले लगाने अथवा एक साथ खाना खाने अथवा रहने से नहीं फैलता है।

हम एच.आई.वी. संचरण से कैसे बच सकते हैं?

- एच.आई.वी. एवं एड्स के बारे में सही जानकारी प्राप्त करके और इस जानकारी को दूसरों तक पहुंचाकर;
- निम्न प्रकार से बचाव संभव है:
  ए – यौन संबंधों में संयम बरतने से
  बी – एक यौन साथी से पारस्परिक वफादारी का संबंध निभाकर
  सी – सुरक्षित यौन व्यवहार के रूप में कंडोम का सही और नियमित उपयोग करें
- आवश्यकता पड़ने पर केवल जांच किये गये खून का इस्तेमाल करके।
- विसंक्रमित सुई/एक बार इस्तेमाल होने वाली सुई (क्पेचवेंइसमै लतपदहमे) का उपयोग करें।
- एच.आई.वी. संक्रमित व्यक्ति या दम्पत्ति अपने होने वाली संतान को संक्रमण से बचा सकता है – डाक्टरी सलाह और सही जानकारी लेकर।
- यौन रोगों के लक्षणों की जानकारी और समय पर इलाज करके।

यौन जनित संक्रमणों (गुप्त/यौन रोग) की उपस्थिति में एच.आई.वी. संक्रमण का खतरा 3 से 10 गुना अधिक हो जाता है।

महिलाओं और पुरुषों में यौन रोग के क्या लक्षण हैं?

पुरुषों में यौन रोग के लक्षण

- लिंग से स्राव अथवा मवाद निकलना
- लिंग पर घाव, फफोले, फुंसियां अथवा फोड़ा होना
- जननेन्द्रियों अथवा लिंग पर या आस–पास सूजन होना
- पेशाब करते समय दर्द या जलन होना
- जननेन्द्रियों में और इसके आस–पास खुजली होना